हिंदी-विभाग

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र

(प्रदेश विधायिका एक्ट 12ए 1956 के तहत स्थापित)

('ए+ श्रेणी' राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा प्रदत्त)

बी. टी. एम. (प्रोग्राम) हिंदी पाठ्यक्रम

सी. बी. सी. एस. (चयन-आधारित क्रेडिट पद्धति),

सत्र 2020-21 से चरणबद्ध तरीके से लागू

कोर्स कोड	कोर्स का नाम	क्रेडिट	शिक्षण घंटे / प्रति सप्ताह	परीक्षा की स्कीम (अंक)			
				परीक्षा	आंतरिक मूल्यांकन	कुल अंक	समय
सेमेस्टर - II							
BTM-HIN-AECC-201	प्रयोजनमूलक हिंदी	**02**	**02**	**40**	**10**	**50**	2.00 घंटे
सेमेस्टर - III							
BTM-HIN-SEC-301	संभाषण कला	**02**	**02**	**40**	**10**	**50**	2.00 घंटे

सेमेस्टर - II

BTM-HIN-AECC-201-प्रयोजनमूलक हिंदी

क्रेडिट - 2 **कुल अंक- 50**

समय- 2.00 घंटे, **परीक्षा अंक - 40, आंतरिक मूल्यांकन - 10**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

प्रयोजनमूलक हिंदी व व्यावहारिक अनुप्रयोग के लिए।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- विविध क्षेत्रों में हिंदी भाषा के स्वरूप व प्रयोग की जानकारी।
- हिंदी भाषा में लेखन कौशल व संप्रेषण में सक्षम।

परीक्षा संबधी निर्देश -

- **पाठ बोध -**निर्धारित रचनाओं से एक पाठांश तथा तत्संबंधी 4 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को उस पाठांश के आधार पर उत्तर देने होंगे। इसके लिए 8 अंक निर्धारित हैं।
- **समीक्षात्मक प्रश्न** - पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठ्य विषयों में से 8 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को किंही 5 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 7 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषय

- हिंदी भाषा का विकास, हिंदी भाषा और भारतीय संविधान, हिंदी भाषा के विविध रूप (राष्ट्र भाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा), देवनागरी लिपि का मानकीकरण।
- बाजार और वाणिज्य के क्षेत्र में हिन्दी भाषा के प्रयोग और चुनौतियां, वाणिज्य क्षेत्र की पारिभाषिक शब्दावली।
- व्यावसायिक क्षेत्र की हिंदी (बैंक, बीमा, मीडिया),
- विज्ञापन की भाषा का स्वरूप और विशेषताएं, प्रिंट, इलेक्ट्रोनिक और ई-विज्ञापनों की भाषा।
- वेब कंटेट लेखन की प्रक्रिया, वेब कंटेट का ले-आऊट, डिजाइन एवं प्रस्तुति, हिंदी के प्रमुख वेबपोर्टल।
- व्यावहारिक लेखन कौशल - कार्यालयी लेखन (पत्र, टिप्पण, प्रारूपण)।
- हिंदी शब्द संपदा (तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज)।
- वर्तनी शोधन।

पाठ बोध के लिए निर्धारित

- **संभाषण -** साहित्य, संस्कृति और शासन **-** महादेवी वर्मा
- **रेखाचित्र** - पुरुष और परमेश्वर - रामवृक्ष बेनीपुरी
- **यात्रा -** मैंने जापान में क्या देखा - भदंत आनंद कौशल्यायन
- **व्यंग्य -** आशा की अंत - बालमुकुंद गुप्त

सहायक पुस्तकें

- व्यावहारिक राजभाषा कोश - दिनेश चमोला
- प्रयोजनमूलक हिंदी - रघुनंदन प्रसाद शर्मा
- रचनात्मक लेखन - रमेश गौतम
- टेलीविजन लेखन - असगर वजाहत और प्रभात रंजन
- संचार भाषा हिंदी - सूर्यप्रसाद दीक्षित
- ब्रेक के बाद - सुधीश पचौरी
- जनसंचार माध्यम -भाषा और साहित्य - सुधीश पचौरी

सेमेस्टर - III

BTM-HIN-SEC-301-संभाषण कला

क्रेडिट - 2 **कुल अंक- 50**

समय- 2.00 घंटे, **परीक्षा अंक - 40, आंतरिक मूल्यांकन - 10**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

संभाषण के सैद्धांतिक व व्यावहारिक पहलुओं से परिचित करवाना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- सावर्जनिक मंचों पर अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होगी।
- वैयक्तिक, सामाजिक व व्यावसायिक व्यवहार में संवाद क्षमता विकसित होगी।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न** - निर्धारित पाठ्यक्रम में से 10 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को 5 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 6 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** - निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषय

- संभाषण का अर्थ, स्वरूप एवं प्रमुख घटक
- संभाषण के विभिन्न रूप-वार्तालाप, व्याख्यान, वाद-विवाद, एकालाप, अवाचिक अभिव्यक्ति, जन संबोधन।
- जन सम्पर्क में वाककला की उपयोगिता
- संभाषण कला के प्रमुख उपादानः भाषा ज्ञान, मानक उच्चारण, सटीक प्रस्तुति, अन्तराल ध्वनि (वाल्यूम),वेग, लहजा (एक्सेण्ट)।
- संभाषण कला के विभिन्न रूपः उदघोषणा कला (अनाउन्सेमेंट), आंखों देखा हाल (कमेन्ट्री), संचालन (एंकरिंग), वाचन कला, समाचार वाचन (रेडियो, टी. वी.), मंचीय वाचन (कविता, कहानी, व्यंग्य आदि)।
- वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं समूह संवाद।
- लोक प्रशासन, जनसम्पर्क एवं विपणन के विकास में संभाषण कला का योगदान।
- संवादी भाषा (कनवर्सेशनल लैंग्वेज) के रूप में हिन्दी की भाषिक संवेदना की विवेचना।

सहायक पुस्तकें

- भाषण कला - महेश शर्मा
- अच्छी हिंदीः संभाषण और लेखन - तेजपाल चौधरी
- व्यावहारिक राजभाषा कोश - दिनेश चमोला
- प्रयोजनमूलक हिंदी - रघुनंदन प्रसाद शर्मा
- रचनात्मक लेखन - रमेश गौतम
- टेलीविजन लेखन - असगर वजाहत और प्रभात रंजन
- संचार भाषा हिंदी - सूर्यप्रसाद दीक्षित
- ब्रेक के बाद - सुधीश पचौरी
- जनसंचार माध्यम -भाषा और साहित्य - सुधीश पचौरी